FYUGP, प्रथम समसत्र/द्वितीय समसत्र

पत्र :- AEC - एम. आई. एल. (हिंदी)

लेखन-कौशल

डॉ. प्रमोद कुमार

सहायक प्राध्यापक,

हिंदी विभाग, सरिया कॉलेज, सरिया

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग

लेखन – कौशल का अर्थ

लेखन-कौशल का अर्थ है- लेखन शब्द 'लिख' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है- "भावों एवं विचारों को लिखकर व्यक्त करना। अर्थात् भाषा-विशेष में स्वीकृत लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कशलता। अधिकांशतः सभी भाषाओं की अपनी लिपि-व्यवस्था होती है। इन लिपि-प्रतीकों को वे ही समझ सकते है, जिन्हें उस भाषा लिपि-व्यवस्था का ज्ञान हो। इससे आशय यह है कि लेखक दवारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते है जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की अच्छा ज्ञान हो।

परिभाषा :-

👉हम जिस कौशल के माध्यम से अपने विचारों को किसी भाषा के स्वीकृत लिपि प्रतीकों में लिखकर व्यक्त करते हैं, लेखन कौशल कहलाता है।

👉रॉबर्ट लैडो के अनुसार," अन्य भाषा में लेखन-कौशल सीखने से आशय लेखन-व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपि-बद्ध करना है जिन्हें लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चरित रूप से प्रयुक्त किया हो अथवा दोहराया हों।"

सामान्यतः मनुष्य प्रायः लेखन का अर्थ केवल किसी सामग्री को लिखने मात्र से लेते है जबकि यह सिर्फ इसका संकुचित अर्थ है व्यापक रूप में लेखन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हमें लिखते समय काफी बातों का ध्यान रखना होता है जैसे विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, विचारों में मौलिकता,विचारों में रचनात्मकता, कल्पनाशीलता आदि।

लेखन-कौशल के मुख्य बिंदु/गुण :-

- सुस्पष्टता।
- शुद्धता।
- क्रमबद्धता बनाए रखना।
- सुसम्बद्धता बनाए रखना।
- लेखन-कुशलता के लिए भाषा विशेष तथा उसकी लिपि-व्यवस्था की पर्याप्त जानकारी आवश्यक है।
- केवल वर्णिमों की रचना अथवा शब्दों के अनुलेखन को लेखन नहीं कहा जा सकता।
- लेखन-व्यवस्था के विभिन्न घटकों से परिचित होना तथा लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करना लेखन के आवश्यक अंग हैं।
- एक प्रकार से अपने मन की कोरी कल्पनाओं को लेखन कौशल के माध्यम से अभिव्यक्ति को व्यक्त करना भी एक कला है। व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति को कविता, कहानी, शायरी, उपन्यास, व्यंग्य, रिपोर्ताज, डायरी, यात्रा अनुभव आदि में व्यक्त करते हैं।
- लेखन के अन्तर्गत जो कुछ भी लिखा जाए, वह सुन्दर एवं आकर्षक होना चाहिए।
- लेखन में सभी अक्षर सुडौल एवं सानुपात होने चाहिए। वर्णों को ठीक-ठीक लिखना, शुद्ध अक्षर विन्यास और सुंदर लेख लेखन होना चाहिए।

- लिखी गई विषय वस्तु पठनीय होनी चाहिए।
- अक्षरों का झुकाव दाहिनी ओर अथवा बायीं ओर नहीं, बल्कि बिल्कुल सीधा लिखा जाना चाहिए।
- पंक्तियाँ टेढ़ी न होकर सीधी हो।
- समान रूपों वाले अक्षर जैसे- म एवं य, भ एवं म, ध और घ सुपाठ्य लिखे जाने चाहिए।
- दो शब्दों के मध्य, दो पंक्तियों के मध्य एवं अनुच्छेदों के मध्य अन्तर होना चाहिए।
- सुलेख में गतिपूर्वक शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए लिखना।
- सरल कहानी, घटनाओं, दृश्यों आदि का लिखित वर्णन करना।
- कल्पना के आधार पर कहानी, संवाद या कविताएँ लिखना।
- विशिष्ट शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के द्वारा लिखित भाषा को प्रभावशाली बनाना।
- विभिन्न विषयों पर लघु निबन्ध का लेखन।
- विराम-चिह्नों का यथोचित प्रयोग करना।
- भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता लाना।
- सुपाठ्य लेख लिखना। लेखन कार्य को यथोचित अनुच्छेदानुसार लिखना।

लेखन-कौशल की विशेषताएं :-

- लेखन कौशल की पहली विशेषता है कि लेखन कौशल के माध्यम से छात्र का ज्ञान क्षेत्र विस्तृत होता है। वह विविध प्रकार की सामग्री एवं विविध विषयों के संबंध में न केवल लेखन के आधार पर जानकारी प्राप्त करता है बल्कि अपने भावों तथा विचारों को भी लिपिबद्ध करने की योग्यता अर्जित करता है। ज्ञानात्मक तथा भावात्मक सामग्री का गहन अध्ययन तथा तत्संबंधी विचारों की स्थायी अभिव्यक्ति की कुशलता लेखन के माध्यम से ही संभव है।
- लेखन-कौशल, भाव प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम तथा भाषा सीखने का चरम सोपान है। इस कुशलता के विकास द्वारा अन्य भाषा के छात्र को अपने भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का एक सबल साधन उपलब्ध होता है।
- वर्णों को ठीक-ठीक लिखना, शुद्ध अक्षर विन्यास और सुन्दर लेख लेखन कौशल की एक विशेषता है।
- वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी, विराम चिह्नों का प्रयोग और छात्रों को सृजनात्मक शक्ति और मौलिक रचना करने में निपुण बनाना भी लेखन कौशल की एक विशेषता है।
- भाषा की अन्य विशिष्टताओं के साथ लिपि प्रतीकों की रचना की योग्यता लेखन कौशल की प्रमुख विशेषता है।

लेखन-कौशल के उद्देश्य (Objectives of Writing Skill)

- लेखन-कौशल के द्वारा छात्रों में स्पष्ट एवं साफ-साफ लिखने की आदत विकसित करना।
- छात्रों में सावधानीपूर्वक लिखने की आदत विकसित करना। छात्रों को वर्णों की ठीक-ठीक बनावट में लिखना सिखाना।
- छात्रों को सुन्दर व सुडौल लेख का अभ्यास कराना।
- छात्रों को शुद्ध अक्षर विन्यास का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों को शुद्ध वाक्य-रचना के नियमों से परिचित कराना।
- छात्रों को भाषा में प्रयुक्त शब्द, सूक्ति, मुहावरे एवं लोकोक्तियों को उचित एवं प्रसंगानुकूल प्रयोग करना सिखाना।
- छात्रों को विराम चिह्नों का सही-सही प्रयोग करना सिखाना।
- छात्रों को विषयानुसार भाषा शैली का प्रयोग करना सिखाना।
- छात्रों में अपने अनुभवों व विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
- छात्रों को अपने विचारों को तार्किक एवं क्रमबद्ध रूप में प्रकट करना सिखाना।

- छात्रों को उचित अनुच्छेदों में विभाजित कर विचारों को अभिव्यक्त करना सिखाना।
- छात्रों की सृजनात्मक अभिक्षमता को विकसित कर उन्हें मौलिक रचना के योग्य बनाना।
- छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- छात्रों में लिखित भाषा के माध्यम से ही लेखन कौशल का विकास करना।
- छात्रों के शब्दकोश को सक्रिय रूप देना।
- मातृभाषा या हिन्दी अक्षरों का वास्तविक स्वरूप चित्रित कर सकने की क्षमता विकास करना।
- छात्रों को लिखने का इतना अभ्यास कराना कि वे यन्त्रवत् गति के साथ धारा प्रवाह रूप से लिख सकें।
- विद्यार्थियों को अपने विचारों तथा अनुभवों को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने का अभ्यास कराना।

लेखन-कौशल का महत्व :-

- भाषा के लिपिबद्ध प्रतीकों का मानव सभ्यता के विकास में विशेष योगदान रहा है। इसके माध्यम से मानव जाति की मान्यताएँ एवं विचार लिखित सामग्री के रूप में सदियों तक सुरक्षित रहतीं हैं और क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संक्रमित करती हैं। मानव अपने पूर्वजों के जीवन, उनके आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों से लिपिबद्ध सामग्री के माध्यम से ही भली-भाँति परिचित होता है। उसके विकास की दिशाएँ इसके द्वारा ही प्रशस्त होतीं हैं।
- अन्य भाषा में लेखन कौशल के विकास द्वारा अन्य भाषा-भाषी जनसमुदाय के साथ विचारों का आदान-प्रदान संभव होता है। इसके माध्यम से वह व्यापक क्षेत्र में अपने विचारों तथा भावों को संप्रेषित करने में समर्थ होता है। लेखन के अभाव में विचारों की अभिव्यक्ति संभव नहीं है।
- लेखन-कौशल के माध्यम से छात्र का ज्ञान क्षेत्र विस्तृत होता है। वह विविध प्रकार की सामग्री एवं विविध विषयों के संबंध में न केवल लेखन के आधार पर जानकारी प्राप्त करता है बल्कि अपने भावों तथा विचारों को भी लिपिबद्ध करने की योग्यता अर्जित करता है। ज्ञानात्मक तथा भावात्मक सामग्री का गहन अध्ययन, तत्संबंधी विचारों एवं शैक्षिक उपलब्धि की स्थायी अभिव्यक्ति लेखन के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा प्रणाली इसके बिना अकल्पनीय है।

- मातृभाषा तथा अन्य भाषा में लेखन कौशल का विकास भाव-प्रकाशन के स्थायी एवं व्यापक रूप पर अधिकार प्राप्त करने का साधन है। लेखन भाव-प्रकाशन का व्यापक एवं शक्तिशाली माध्यम तथा भाषा सीखने का चरम सोपान है। इस कुशलता के विकास दवारा अन्य भाषा के छात्र को अपने भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का एक सबल साधन उपलब्ध होता है।
- लेखन-कौशल का महत्त्व इस दृष्टि से भी स्वतः स्पष्ट है कि प्रत्येक लेखन-व्यवस्था के साथ उसकी संस्कृति भी सम्बद्ध रहती है। लेखन के माध्यम से सम्बद्ध संस्कृति का संरक्षण, सम्बर्धन और संक्रमण होता है। लेखन कौशल से परिचित होने के साथ ही छात्र भाषाई संस्कृति से भी परिचित होता है।
- दैनिक जीवन का विवरण रखने, घर का दैनिक हिसाब-किताब रखने के लिए लिखित भाषा का प्रयोग होता है।
- लिखित भाषा ही साहित्य के भंडार में वृद्धि करती है यदि लिपि न होती तो साहित्य भी नहीं होता।
- व्यावसायिक एवं औदयोगिक प्रगति का आधार भी लिखित भाषा है। मौखिक रूप से कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त नही की जा सकती है। प्रत्येक व्यवसाय में तरह-तरह के अभिलेख आदि लिखकर रखने पड़ते हैं।
- सभी सरकारी कार्यालयों में लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है। कार्यालयों तथा न्यायालयों के अभिलेख (रिकॉर्ड), निर्णय, नीतियाँ तथा नियम लिखित भाषा में होते हैं।

- आधुनिक युग में ज्ञान का आदान-प्रदान चल रहा है। महाविद्यालयों में पाठ्यक्रम की पुस्तकें निर्धारित की जाती है। पाठ्य-वस्तु को पढ़ने के लिए विद्यार्थी को सामग्री, इकट्ठी करनी पड़ती है और नोट्स बनाने पड़ते है इसलिए लिखित भाषा का ज्ञान विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है।
- जीवन के ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जहाँ मात्र मौखिक अभिव्यक्ति से काम नहीं चल सकता ऐसे क्षेत्रों में लिखित अभिव्यक्ति का ही सहारा लेना पड़ता है।
- भाषा के मुख्य दो रूप हैं- मौखिक एवं लिखित। अतः भाषा पर अधिकार की दृष्टि से दोनों रूपों की शिक्षा अनिवार्य है।
- लिखित भाषा से ही साहित्यिक ज्ञान के भण्डार में वृद्धि होती है। लेखन कौशल नहीं होता तो नए साहित्य एवं नवीन रचनाओं का होना सम्भव नहीं हो सकता था।

स्पष्ट है कि अन्य भाषा में लेखन-कौशल सिखाने का अर्थ छात्र को उस भाषा की लेखन-व्यवस्था से परिचित कराना है। इसमें भाषा की लिपि-व्यवस्था तथा उसकी विशिष्टताओं की जानकारी के साथ-साथ उस भाषा का पर्याप्त ज्ञान जरूरी है तभी लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति संभव है। प्रत्येक भाषा की अपनी परम्परागत लेखन-व्यवस्था होती है, इसमें वैयक्तिक अभिरूचि के अनुसार परिवर्तन नही किया जा सकता। अतः भाषा की अन्य विशिष्टताओं के साथ लिपि-प्रतीकों की रचना की योग्यता लेखन-कौशल की प्रमुख विशेषता है।

- लेखन की कुशलता अभ्यास-जनित है। अभ्यास को आदत के रूप में परिणत करने पर ही लिपि-व्यवस्था पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। लेखन-व्यवस्था का सतत अभ्यास करने तथा सजग रूप में उसका प्रयोग करने पर वह व्यवहार का सहज अंग बन जाती है, आदत के रूप में परिणत हो जाती है। इसके आधार पर ही लेखन-कौशल का विकास संभव है। छात्र में इस प्रकार की अभ्यास-जनित कुशलता उत्पन्न करना मातृभाषा तथा अन्य भाषा-शिक्षण का विशिष्ट उद्देश्य है।
- प्रत्येक लेखन-व्यवस्था के साथ उसकी संस्कृति भी सम्बद्ध रहती है। लेखन के माध्यम से सम्बद्ध संस्कृति का संरक्षण, संवर्द्धन और संक्रमण होता है। अन्य भाषा का अध्येता लेखन-कौशल के माध्यम से ही भाषा में निहित संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है।
- किसी समाज की संस्कृति से अवगत होने के लिए उस मानव समुदाय की भाषा को पढ़ना और लिखना सीखना अत्यन्त जरूरी है। लेखन के माध्यम से लेखक पाठकों तक अपने विचारों तथा भावों को सम्प्रेषित कर सकता है। इतना ही नही, अपने उच्चतम रूप में यह सर्जनात्मक लेखन का भी एकमात्र माध्यम है। लेखन के माध्यम से ही वह अपने विचारों तथा भावों को साहित्यिक रचना के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित कर सकता है।
- धरातल पर साहित्य की अभिव्यक्ति को स्थायित्व प्रदान करने का गौरव लेखन-कौशल को ही प्राप्त है।

लेखन-कौशल के प्रकार -

1. सुलेख, 2. अनुलेख, 3. श्रुतलेख, 4. प्रतिलेख

1. सुलेख (Calligraphy) :- 'सुलेख' शब्द का दो शब्दों से मिलकर बना है सु+लेख = सुलेख (सु- सुंदर, लेख- लिखा हुआ) (सुंदर लिखा हुआ लेख) अर्थात् सुलेख का अर्थ होता है परस्पर वर्णों तथा वर्णों के मात्राओ को उचित स्थान पर बैठाना।

- वर्णों, शब्दों, वाक्यों तथा पंक्तियों की परस्पर दूरी समुचित रूप से होनी चाहिए। सुलेख में लिखते समय पृष्ठ के बाईं और उचित हाशियाँ छोड़ा जाना विसुलेख कहा जाता है। अतः अक्षरों को सुंदर एवं सुव्यवस्थित रूप से लिखना ही सुलेख कहलाता है।
- सुलेख में वर्णों का आकार, दूरी कोण सभी उचित मात्रा में होते है। सुलेख लिखने के लिए अनुलेखन व प्रतिलेखन करना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

सुलेख (सुंदर लेख) के निम्नलिखित गुण होने चाहिए :-

- परस्पर वर्णों में तथा वर्णों का मात्राओं के साथ आकार की दृष्टि से अनुपात हो।
- देवनागरी लिपि के वर्गों में पाई (n) का चिह्न लेख को सुंदर बनाने में बहुत महत्त्व रखता है। यदि पाई सीधी होगी तो वर्ण सुंदर बनेगे। पाई का कोण 90 अंश पर होना चाहिए।

- देवनागरी लिपि के वर्गों पर शिरोरेखा लगाना अनिवार्य माना जाता है। अतः प्रत्येक शब्द पर शिरोरेखा अवश्य हो। शिरारेखा बिल्कुल सीधी होनी चाहिए।
- वर्णों में मात्राओं का योग ठीक से हो। विशेष रूप से 'ई' की मात्रा से पूर्व आधे व्यंजन के योग में तथा 'र' के साथ लगने वाली 'उ' व 'क' की मात्राओं में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है।
- वर्णों, शब्दों, वाक्यों तथा पंक्तियों की परस्पर दूरी समुचित रूप से होनी चाहिए। यह दूरी न तो बहुत अधिक हो और न ही बहुत कम।
- लेख को समुचित अनुच्छेदों में विभाजित किया जाना चाहिए। अनुच्छेद निर्माण एक कला है। अलग-अलग विचार के लिए अलग-अलग अनुच्छेद की रचना की जानी चाहिए। ध्यान रहे, न तो एक ही विचार के लिए कई अनुच्छेद बनाए जाएँ और न ही एक अनुच्छेद में कई विचारों का समावेश हो।
- लिखते समय पृष्ठ के बाँयी ओर उचित हाशिया छोड़ा जाना भी सुलेख के लिए अनिवार्य है।

2. अनुलेख (Imitate) :-

अनुलेख का अर्थ है किसी लिखावट के पीछे या बाद का लेख। अर्थात् किसी लिखे हुए लेख का अनुशरण करके पुनः वही शब्द लिखना।

किसी आदर्श लिखाई का हुबहू अनुकरण करना अनुलेख या अनुलिपि कहलाता है। इसमें छात्र शिक्षक के आदर्श लेख का बिल्कुल हुबहू अनुकरण करते हैं। शिक्षक तख्ती या कॉपी पर वर्ण या शब्द लिख देता है और बच्चे देखकर ठीक वैसा ही लिखने का अभ्यास करते हैं।

- एक प्रकार से यह विधि भी रूपरेखा अनुकरण विधि जैसी ही होती है परंतु इसमें छात्रों को स्वतंत्र रूप से लिखना पड़ता है।
- इस विधि के अन्तर्गत अध्यापक कॉपी या स्लेट पर सबसे ऊपर अक्षरों को लिख देता है उनके नीचे की पंक्तियाँ रिक्त रहती हैं। छात्रों को उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं उसी प्रकार के अक्षरों को बनाने के लिए कहा जाता है।
- इस विधि में बच्चों को ऊपर लिखे वर्ण के अनुपात में उसी जैसा वर्ण बनाना पड़ता है।
- इस विधि के द्वारा बच्चों को वर्ण, शब्द व वाक्यों का अभ्यास कराया जाता है।

3. श्रुतलेख (Dictation) :-

सुनकर लिखने को श्रुतलेखन कहा जाता है। इस विधि में अध्यापक बोलता जाता है, छात्र सुनकर अभ्यास-पुस्तिका या तख्ती पर लिखता जाता है। सामान्य भाषा में इसे 'ईमला लिखना' भी कहा जाता है। इसे लेखन में सुधार के लिए प्रयोग किया जाता है।

- श्रुतलेख में छात्र सुनी हुई ध्वनियों को लेखनीबद्ध करते हैं।
- श्रुतलेख में सुंदर लेख का इतना महत्त्व नहीं है, जितना भाषा की शुद्धता का।
- श्रुतलेख का उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रिय को पूर्ण शिक्षित करना भी है ताकि वह भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सकें।
- इसमें बच्चे की लिखावट में सुडौलता, स्पष्टता व गति लाना भी उद्देश्य रहता है।

• 4. प्रतिलेख (Transcript) :-

प्रतिलेख का अर्थ होता है- लेख की प्रतिलिपिदेखकर लिखने को ही प्रतिलेख कहते है। इस विधि में शिक्षक बोर्ड पर लिखा हुआ या किताब में लिखा हुआ कोई पैरा बच्चों से अपनी अभ्यास पुस्तिका में स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए कहता है। तथा छात्र किताब या बोर्ड देखकर वाक्यों को अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखते हैं।

- कोई निबंध पढ़कर अथवा भाषा सुनकर, बाद में उसे अपनी अभ्यास पुस्तिका में अपने शब्दों में लिखना प्रतिलेख कहलाता है।

धन्यवाद